शोध-प्रारूप

संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप की रूपरेखा
स्नातकोत्तर संताली विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष : 2025

शोध निर्देशक:

डॉ॰ किरण कुल्लू
सहायक प्राध्यापिका
खड़िया विभाग
राँची वीमेंस कॉलेज,राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:

विजय कुमार मरांडी
एम॰ए॰ संताली
यू॰जी॰सी॰ नेट/ जे॰आर॰एफ॰ (संताली)
स्नातकोत्तर संताली विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (प्रस्तावित शोध प्रारूप)

<u>भूमिका</u> :

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ आदिकाल से ही विभिन्न जनजातियाँ निवास करती आ रही हैं | इन्हीं जनजातियों में से एक प्रमुख जनजाति संताल है। संताल जनजाति का संबंध प्रोटो-ऑस्ट्रालॉयड प्रजाति समूह से है। संताल भारत की तीसरी सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति है। संतालों का सर्वाधिक संकेन्द्रण झारखण्ड के उत्तर-पूर्व क्षेत्र संताल परगना में है, इसके अतिरिक्त उत्तरी छोटानागपुर, दक्षिणी छोटानागपुर, तथा कोल्हान में भी यह जनजाति पायी जाती है। भाषाई दृष्टि से संताल जनजाति ऑस्ट्रो एशियाटिक समूह के अंतर्गत आती है | ऑस्ट्रो एशियाटिक भाषाई ग्रुप के लोग आज से लगभग 60,000 वर्ष पहले से भारत में रह रहे हैं तथा भारत के प्रथम निवासी माने जाते हैं। इनका भाषाई क्षेत्र भारत के झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों के विभिन्न भागों में पायी जाती है| संताली भाषा का प्रयोग भारत के अलावे नेपाल, बांग्लादेश आदि देशों में किया जाता है| इस भाषा को 92वाँ संविधान संशोधन 2003 द्वारा भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया है।

संताली भाषा जितनी प्राचीन है उतना ही प्राचीन है उसका लोकसाहित्य। संताली साहित्य दो भागों में विभाजित है(1) लोक साहित्य (2) शिष्ट साहित्य। लोक साहित्य या मौखिक साहित्य आज से 5000-6000 वर्ष पूर्व से रहा है। उस समय लिखित साहित्य थी या नहीं यह

कहना कठिन है। लेकिन संताली लोकसाहित्य, लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकोक्तियाँ, मुहावरें, पहेलियाँ, बिनती, मानतार, झारनी, तथा लोरी, प्रकीर्ण साहित्य के रूप में आदिकाल से ही विद्यमान हैं।वर्तमान समय में भी यह अपनी लोकप्रियता के कारण प्रसिद्ध है।संताली शिष्ट साहित्य या लिखित साहित्य का आरंभ आज से लगभग पौने दो सौ साल पहले शुरू हुआ है। सन् 1845 ईस्वी के पूर्व संभवतः लिखित संताली साहित्य प्रकाश में नहीं आया था। विदेशी ईसाई मिशनरियों ने संतालों के जातीय संस्कार, भाषा एवं धर्म का अध्ययन किया और संताली भाषा में उसे अभिव्यक्त किया। विदेशी ईसाई मिशनरियों से पूर्व संताली साहित्य को लिखने का प्रयास नहीं हुआ है, अतः संताली शिष्ट साहित्य को आंरभ करने का श्रेय उन्ही को जाता है।

संताली शिष्ट साहित्य साहित्यिक सौंदर्य को प्रस्तुत करती है तथा समाज के विविध पहलुओं को भी उजागर करती है। वर्तमान में संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा का विश्लेषण काफी महत्वपूर्ण हो गया है।यह अध्ययन करने से साहित्यिक विकास को समझने में सहायक होगा साथ ही समाज में इसकी भूमिका और प्रभाव को भी स्पष्ट करेगा ।

संताली शिष्ट साहित्य की दशा एंव दिशाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन में संताली भाषा और साहित्य, संताली शिष्ट साहित्य की अवधारणाएँ, संताली शिष्ट साहित्य की विधाएँ, वर्तमान परिपेक्ष्य में संताली शिष्ट साहित्य, संताली शिष्ट साहित्य के प्रमुख अयाम, संताली शिष्ट साहित्य एवं संचार माध्यम, संताली शिष्ट साहित्य में प्रमुख लेखकों का योगदान के साथ इनके विभिन्न पक्षों को इस शोध के माध्यम से जानने एवं समझने का प्रयास किया जाएगा |

<u>प्रेरणा</u> :

झारखण्ड राज्य के बोकारो जिला के चन्द्रपुरा प्रखण्ड के ग्राम बंदियों (हथिया पत्थर) में मेरा जन्म हुआ है। बोकारो जिला उत्तरी छोटानागपुर प्रमण्डल के अंतर्गत आता है, जो संताली भाषी बहुल क्षेत्र है| जहाँ मेरा बचपन गुजरा है और मेरी परवरिश भी इसी माहौल में हुई है। मेरे गांव में अक्सर त्योहारों के अवसर पर संताली गीत तथा नृत्य, का आयोजन किया जाता है, तथा बुजुर्गों द्वारा संताली लोककथा, कहावत, पहेली, चुटकुला आदि सुनाया जाता है, जिस कारण मातृभाषा संताली के प्रति लगाव रहा है। अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम और साहित्य को जानने और पढ़ने की जिज्ञासा के कारण मैंने स्नातकोत्तर संताली में की है| पढ़ाई के दौरान जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के शोधार्थियों के संपर्क में आने से काफी कुछ सीखने का अवसर मिला, जिससे मुझ में शोध करने की इच्छा जगी। जब मैं संताली साहित्य को पढ़ा और जाना तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि क्यों न मैं समाज को संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा की ओर प्रेरित करूँ तथा संताली भाषा एवं साहित्य समृद्धि में अपना योगदान दूँ। इस विषय पर संताली विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष से चर्चा की उन्होंने मुझे संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया, साथ ही विभाग के सहायक प्राध्यापकों, शोधार्थियों, परिवार के सदस्यों एवं मित्रों ने भी इस शोध के लिए मुझे प्रेरित किया| इसके उपरांत मैं राँची वीमेंस कॉलेज राँची खड़िया विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ० किरण कुल्लू से मिला| उन्होंने भी मुझे शोध कार्य हेतु शोध निर्देशक के रूप में अपनी स्वीकृति दी|

शोध विषय का औचित्य :

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता है जब तक कि उसकी उपयोगिता समाज, प्रदेश एवं देश के लिए ना हो।

परिकल्पना :

किसी भी क्षेत्र के अनुसंधान में परिकल्पना एक स्तम्भ माना जा सकता है| जब तक मनुष्य के मन में चिंतन नहीं होगा, किसी भी विषयवस्तु की कल्पना नहीं की जा सकती है| वर्तमान समय में संताल जनजातियों की संस्कृति एवं साहित्य को संरक्षित रखना इस विकास की गति में चुनौती बन गई है। इनकी संस्कृति एवं साहित्य को जीवित रखने के लिए संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा:एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पर शोध करके संताल जनजातियों के साहित्य को समाज के सामने दिग्दर्शित करने की परिकल्पना मेरे मन में आया।

शोध का उद्देश्य :

1. समाज को संताली भाषा साहित्य की ओर ध्यान आकर्षित करना।
2. संताली साहित्य का अध्ययन करना और साहित्यिक विकास में योगदान देना ।
3. नई पीढ़ी को संताली साहित्य से जुड़ने के लिए उत्साहित करना।
4. संताली साहित्य के रचनाकारों को समाज में प्रतिष्ठित करना और उनके कार्य को बढ़ावा देना ।

शोध का महत्व :

1. संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा एक विश्लेषणात्मक अध्ययन के प्रकाशित होने से समाज को संताली भाषा-भाषियों में साहित्य के प्रति जागरूकता बढ़ेगी ।

2. नई पीढ़ी संताली साहित्य को लिखने और रचना करने के लिए प्रेरित होंगे ।

3. जब रचनाएँ पाठकों तक पहुँचेंगी, तो वे इसके महत्व को समझ सकेंगे जिससे लेखन में उनकी रूचि बढ़ेगी ।

4. यह शोध से संतालों की परंपरा, भाषा, गीत-नृत्य और जीवनशैली न सिर्फ आदिवासी समाज में पहुँचेगी, बल्कि गैर-आदिवासी समाज में भी पहुँचेगी ।

शोध प्रविधि :

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित शोध विधियों को अपनाया जाएगा :-

1. विश्लेषणात्मक विधि
2. अवलोकन विधि
3. साक्षात्कार विधि
4. अनुसूचि विधि

<u>उपकरण</u> :

निम्नलिखित सामग्री शोध के लिए उपयोग किये जा सकते हैं :-

1. शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएँ, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें
2. पत्र-पत्रिकाएँ
3. टेप रिकॉर्डर
4. कैमरा
5. कम्प्युटर
6. इंटरनेट
7. मोबाईल
8. नक्शा, पेपर इत्यादि

<u>प्रस्तुत विषय से संबंधित शोध कार्य</u> :-

प्रस्तावित शोध का कार्य "संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन को सामने लाने में यथा संभव भूमिका निभा सकेंगे। विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में और शोध गंगा जैसे वेब साइट्स जाँचने के बाद ज्ञात हुआ कि मेरे द्वारा प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है।

<u>प्रस्तावित रूपरेखा</u> :-

शोध विषय: संताली शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

- प्रस्तावना
- शोध विषय की प्रेरणा
- शोध का परिकल्पना

- शोध का उद्देश्य
- शोध का महत्व
- शोध का परिसीमन
- शोध विधि
- प्रस्तुत विषय से संबंधित कार्य

अध्याय विभाजन:

1. **प्रथम अध्याय: संताली भाषा और साहित्य का सामान्य परिचय**
    - (i) संताली भाषा: भाषाई पहचान और क्षेत्रीय विस्तार
    - (ii) संताली साहित्यः उत्पत्ति और विकास
    - (iii) संताली साहित्य: काल विभाजन
2. **द्वितीय अध्याय: संताली शिष्ट साहित्य की अवधारणाएँ**
    - (i) शिष्ट साहित्य की परिभाषा एवं विशेषताएँ
    - (ii) शिष्ट साहित्य उद्भव और विकास
    - (iii) शिष्ट साहित्य में विविध लिपियों का योगदान
3. **तृतीय अध्याय: संताली शिष्ट साहित्य की विधाएँ**
    - (i) **संताली पद्य विधाएँ**
        - (क) गीत
        - (ख) कविता
    - (ii) **संताली गद्य विधाएँ**
        - (क) कहानी
        - (ख) उपन्यास
        - (ग) नाटक
        - (घ) निबंध
        - (ङ) आत्मकथा

(च) यात्रावृत्तांत

4. चतुर्थ अध्याय: वर्तमान परिपेक्ष्य में संताली शिष्ट साहित्य

(i) नवलेखन की दिशा

(ii) अनुवाद और वैश्विक पहुँच

(iii) भाषा और शैली का प्रयोग

(iv) शिक्षा और अकादमी क्षेत्र

5. पंचम् अध्याय: संताली शिष्ट साहित्य के प्रमुख आयाम

(i) सामाजिक परिस्थिति

(ii) सांस्कृतिक परंपरा एवं जीवन शैली

(iii) प्रकृति, पर्यावरण एवं लोकचेतना

(iv) धार्मिक आस्थाएँ एवं मान्यताएँ

(v) स्त्री विमर्श एवं भूमिका

6. षष्ठ अध्याय: संताली शिष्ट साहित्य एवं संचार माध्यम

(i) पत्र पत्रिकाएँ

(ii) रेडियों एवं दूरदर्शन

(iii) सिनेमा

(iv) अखबार

(v) अन्य साधन

7. सप्तम् अध्याय: संताली शिष्ट साहित्य में प्रमुख लेखकों का योगदान

(i) विदेशी लेखक

(ii) स्वदेशी लेखक

<u>सारांश एवं निष्कर्ष</u>

परिशिष्ट :

आधार ग्रंथो की सूची

संदर्भ ग्रंथों की सूची

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोट- शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

शोध निर्देशक:

डॉ० किरण कुल्लू
सहायक प्राध्यापिका
खड़िया विभाग
राँची वीमेंस कॉलेज,राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:

विजय कुमार मरांडी
एम०ए० संताली
यू०जी०सी० नेट/ जे०आर०एफ० (संताली)
स्नातकोत्तर संताली विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

1. खान डॉ० एम फिरोज खान, नियाज शगुफ्ता, आदिवासी साहित्य दशा एवं दिशा, अनुसंधान पब्लिशर्स, 2021
2. गजापुरे सुषमा, वर्तमान हिन्दी-साहित्य की दशा और दिशा, बोधरस प्रकाशन, 2023
3. गुप्ता रमणिका, आदिवासी साहित्य यात्रा, नेहा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री ब्युटर्स, 2018
4. टुडू डॉ० कृष्ण चन्द्र, संताली होड़ सावहेत, प्रोफेसर कृष्ण कुटिर, राजदोहा, सिंहभूम, 2008
5. टुडू डॉ० कृष्ण चन्द्र एवं/यशोदा टुडू, संताली भाषा अन्वेषिका भाषा साहित्य एवं संस्कृति, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2011
6. टुडू डॉ० कृष्णचन्द्र, संताली सावहेत रेयाक ओमोनोम आर हारा, संताली साहित्य परिषद, राँची, 2012
7. टेटे वंदना, वाचिकता आदिवासी दर्शन साहित्य और सौन्दर्य बोध, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2020
8. माँझी डॉ० धानेश्वर, संताली लोककथा का एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन बरियातु, राँची, 2006
9. हेम्ब्रम डॉ० रतन, संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2005
10. हाँसदा डॉ० अनिमा, संताली भाषा एवं साहित्य के विकास में मिशनरियों का योगदान, जेवियर पब्लिकेशन, राँची, 2017
11. हाँसदा डॉ० अनिमा, संताली साहित्य में सांस्कृतिक चेतना, जेवियर पब्लिकेशन, राँची, 2017
12. हाँसदा जितेन्द्रनाथ, संताली भाषा व्याकरण एवं साहित्य, शिवांगन पब्लिकेशन रातु रोड, राँची, 2015
13. श्रीधर प्रो० प्रदीप प्रवासी, हिंदी साहित्य दशा एवं दिशा, तक्षशिला प्रकाशन 2018

<u>संदर्भ ग्रंथों की सूची</u>

1. उपाध्याय डॉ० कृष्णदेव, लोकसाहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
2. किस्कू फ्रांसिस, संताली सावहेत् रेयाक उनुरूम, संपर्क पब्लिकेशन, 1985
3. टुडू डॉ० कृष्ण चन्द्र,सानताड़ी पारसी उनुरूम, कृष्णा कुटीर राजदोहा,पूर्वी सिंहभूम 2006
4. टुडू डॉ० कृष्ण चन्द्र, खेरवाल आरी बादी, राजदोहा जादुगोड़ा पोटका पूर्वी सिंहभूम, 2011
5. टुडू डॉ० कृष्ण चन्द्र, संताली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, यश पब्लिकेशन सुभाष पार्क दिल्ली, 2018
6. टुडू डॉ० कृष्ण चन्द्र, आदिवासी समाज एवं संस्कृति, प्रोफेसर कृष्णा कुटीर राजदोहा पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड, 2021
7. टुडू माँझी रामदास, खेरवाल वंशो धोरोम पूथी, वेदान्त प्रेस कोलकत्ता लोकभारती प्रकाशन, 1882
8. टुडू सुशील, संताली साहित्य मे राष्ट्रीय भावना, आयुष्मान पब्लिकेशन, 2014
9. टुडू श्रीपती, संताली सावहेत रेयाक लाहन्ति, टॉरेन पब्लिकेशन, 2023
10. टेटे वंदना, आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन, नोटियन प्रेस, 2021

11. प्रसाद विशेश्वर, झारखंडी भाषाओं की समस्याएँ और संभावनाएँ, प्रथम संस्करण, रांची।, 1992

12. बास्के धीरेन्द्रनाथ/श्रीमती अनीता बास्के, होड़ समाज रेयाक आरी विचार धारा कलकत्ता, 1992

13. मुरमू रामेश्बर (आदिम सान्ताड़), धर्म बंगा बुरू गचार नेमाचार, आदिम पब्लिकेशन कोलकाता निठ आलिपुर, 2001

14. मुरमू रामेश्बर (आदिम सान्ताड़), जाहेर बंगा सान्ताड़, क आदिम पब्लिकेशन कोलकाता निठ आलिपुर, 2001

15. सुधिर मनीष, हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्ध दशा और दिशा, वनया पब्लिकेशन कानुपर, 2022

16. समीर डॉ० डोमन साहू, संताली लोककथाएँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नेहरू भवन दिल्ली, 2021

17. हेम्ब्रम परिमल, सावंताली साहित्यरे संक्षिप्त परिचय, मांर बुरु प्रेस मेचेदा,1995

18. हाँसदा प्रो० दिगम्बर, संताली लोककथाओं का संग्रह, संताली साहित्य परिषद् करनडीह, पूर्वी सिंहभूम, 1987

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

1. आहला (मासिक साहित्यिक पत्रिका) प्रो० दिगम्बर हाँसदा, करनडीह टाटानगर झारखण्ड सन, 1956
2. उमुल (त्रैमासिक साहित्यिक), डॉ० विनय कुमार सोरेन शांतिनिकेतन बीरभूम पछिम बंगाल सन, 2009
3. पछिम बंग्ला (साप्ताहिक पत्रिका) धीरेन्द्र नाथ बास्के, तथ्यओ जनसंयोग अधिकर्ता पछिम बंगाल सन,1971
4. पाँजा-श्याम सी० टुडू, दाबांकी पोटका झारखण्ड सन, 2007
5. फागुन (मासिक साहित्यिक पत्रिका) मालती मुर्मू, भुवनेश्वर उड़िसा, सन, 2009
6. मारसाल (मासिक साहित्यिक पत्रिका), सिहरी मुर्मू, खेरवाल लिटेररी सोसाईटी राजदोहा, पूर्वी सिंहभूम झारखण्ड, सन, 1941
7. संताली स्मारीका (वार्षिक साहित्यिक पत्रिका), संताल संस्कृति सोसाइटी राँची सन,1997
8. सिली (मासिक साहित्यिक पत्रिका) कलेन्द्रनाथ माण्डी, सिरिसगोड़ा, पुरुलिया, पछिम बंगाल, सन, 1981
9. होड़ सोम्बाद (साप्ताहिक पत्रिका) डोमन साहू 'समीर' सूचना एवं जनसंयोग विभाग, विभाग, बिहार सरकार पटना द्वारा साहित्य प्रेस देवघर- सन, 1947
10. होड़ होपोन रेन पेड़ा, एल०ओ० स्क्रेफसरूड, बेनागाड़िया मिशन, सन, 1890